• श्रावण...

## पुत्रदा एकादशी...

हिन्दू धर्म में एकादशी का खास महत्व है। एकादशी का व्रत करने से जातक का मन चंचल नहीं होता है बल्कि शांत रहता है। पुत्रदा एकादशी साल में दो बार आती है एक है श्रावण एकादशी तथा दूसरी है पौष एकादशी। सावन महीने में आने वाली पुत्रदा एकादशी का व्रत संतान प्राप्ति तथा संतान की समस्याओं के निवारण हेतु किया जाता है। इस व्रत को करने से संतान संबंधी हर चिंता और समस्या का अंत हो जाता है। इस वर्ष श्रावण पुत्रदा एकादशी 30 जुलाई को है। वैसे तो पुत्रदा एकादशी धूमधाम पूरे देश में धूमधाम से मनाई जाती है लेकिन उत्तर भारत में पौष शुक्ल पक्ष एकादशी का खास महत्व है। लेकिन दक्षिण भारत में श्रावण पुत्रदा एकादशी की महत्ता अधिक है। ऐसा माना जाता है कि इस व्रत को करने से संतान की प्राप्ति होती है तथा मृत्यु उपरांत मोक्ष मिलता है।

दक्षिण भारत में श्रावण पुत्रदा एकादशी की विशेष महत्ता है। मान्यताओं के अनुसार श्रावण पुत्रदा एकादशी का व्रत करने से वाजपेयी यज्ञ के समान पुण्यफल की प्राप्ति होती है। यही नहीं पुत्रदा एकादशी के व्रत से योग्य संतान की प्राप्ति होती है। यदि पूर्णमनोयोग से नि:संतान दंपति इस व्रत को करें तो उन्हें संतान सुख अवश्य मिलता है। पुत्रदा एकादशी की व्रत कथा पढ़ने और सुनने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए उनके भक्त एकादशी का कठोर व्रत रखते हैं। लेकिन एकादशी का व्रत निर्जला भी रखा जाता है जो बहुत कठोर होता है । इसके अलावा एकादशी का वर्त जल के साथ भी किया जाता है। इसके अलावा एकादशी का व्रत संयमित तरीके से फलाहार के साथ भी किया जाता है।

संतान की कामना हेतु एकादशी के दिन भगवान कृष्ण या विष्णु की पूजा करनी चाहिए, निर्जला व्रत स्वस्थ व्यक्ति को रखना चाहिए व आम लोगों को फलाहार या जल पर उपवास रखना चाहिए।

एकादशी व्रत में व्रती को दशमी के दिन से ही सात्विक आहार खाना चाहिए। यही नहीं ब्रह्मचर्य के नियमों का भी पालन करें। व्रत के दिन सुबह नहा कर व्रत का संकल्प लें और भगवान विष्णु की पूजा करें। रात में कीर्तन करते हुए जगे रहें। उसके बाद द्वादशी के दिन के सूर्योदय के बाद पूजा होनी चाहिए।

• नाग पंचमी पर...

# भूलकर भी न करें ये काम

नाग पंचमी का त्योहार सावन (श्रावण) के महीने में आता है। प्रचलित हिंदू मान्यता के अनुसार पृथ्वी शेषनाग के फन पर टिकी है और भगवान शिव जी भी सांपों की माला को पहने रहते हैं इसलिये सर्प को देवता के रूप में पूजा जाता है। नाग पंचमी पर सांपों की पूजा तो की जाती है। इसके साथ ही कुछ एसी चीजें हैं जो हमें इस दिन नहीं करनी चाहिए।

▸▸ वैसे तो इस दिन भूमि आदि नहीं खोदनी चाहिए परंतु उपवास करने वाला मनुष्य सांयकाल को भूमि की खुदाई कभी न करे। नागपंचमी के दिन धरती पर हल न चलाएं।

▸▸ देश के कई भागों में तो इस दिन सुई धागे से किसी तरह की सिलाई आदि भी नहीं की जाती तथा न ही आग पर तवा और लोहे की कड़ाही आदि में भोजन पकाया जाता है।

▸▸ **नाग पंचमी पर पूजा का सही तरीका:** नागपंचमी की पूजा करने से पहले यह जान लें कि नाग पंचमी पर सामान्य तरीके से पूजा उपासना कैसे की जाएगी। सुबह-सुबह स्नान करके भगवान शंकर का स्मरण करें। नागों की पूजा शिव के अंश के रूप में और शिव के आभूषण के रूप में ही की जाती है क्योंकि नागों का कोई अपना अस्तित्व नहीं है। अगर वो शिव के गले में नहीं होते तो उनका क्या होता। इसलिए पहले भगवान शिव का स्मरण करेंगे। शिव का अभिषेक करें, उन्हें बेहपत्र और जल चढ़ाएं।

▸▸ यदि आप राहु-केतु से परेशान है तो एक बड़ी सी रस्सी में सात गांठें लगाकर प्रतिकात्मक रूप से उसे सर्प बना लें। इसे एक आसन पर स्थापित करें। अब इस पर कच्चा दूध, बताशा और फूल अर्पित करें। साथ ही गुग्गल की धूप भी जलाएं। इसके पहले राहु के मन्त्र-***ऊं रां राहवे नमः*** का जाप करना है और फिर केतु के मंत्र ***ऊं कें केतवे नमः*** दोनों का 1008 बार जाप करें। जितनी बार राहु का मंत्र जपेंगे उतनी ही बार केतु का मंत्र भी जपना है। जितना ज्यादा जप करेंगे उतना ही फायदा होगा। मंत्र का जाप करने के बाद भगवान शिव का स्मरण करते हुए-***ओम नमः शिवाय*** बोलते हुए एक-एक करके रस्सी की गांठ खोलते जाएं। फिर रस्सी को बहते हुए जल में प्रवाहित कर दें। राहु और केतु से संबंधित जीवन में कोई समस्या है तो वह समस्या दूर हो जाएगी। अगर आपको सर्प से डर लगता है या सांप के सपने आते हैं तो चांदी के दो सर्प बनवाएं। साथ में एक स्वास्तिक भी बनवाएं। जो लोग चांदी का नहीं बनवा सकते तो जस्ते का बनवा लीजिए। अब थाल में रखकर इन दोनों सांपों की पूजा कीजिए और एक दूसरे थाल में स्वास्तिक को रखकर उसकी अलग पूजा कीजिए।

# नाग पंचमी पर भगवान शिव की पूजा

इस दिन काष्ठ पर एक कपड़ा बिछाकर उस पर रस्सी की गांठ लगाकर सर्प का प्रतीक रूप बनाकर, उसे काले रंग से रंग दिया जाता है। कच्चा दूध, घृत और शर्करा तथा धान का लावा इत्यादि अर्पित किया जाता है।

**पूर्वी उत्तर प्रदेश में इस दिन दीवारों पर गोबर से सर्पाकार आकृति का निर्माण कर सविधि पूजन किया जाता है। प्रत्येक तिथि के स्वामी देवता हैं...**

प्रत्येक वर्ष शुक्ल श्रावण पंचमी को नागपंचमी का पर्व मनाया जाता है। इस दिन नाग देवता का पूजन होता है। नाग पंचमी पर भगवान शिव की आराधना करने से कालसर्प योग, पितृ दोष, चांडाल योग, मंगल दोष का निवारण होता है नाग पंचमी के दिन भगवान शिव के विधिवत पूजन से हर प्रकार का लाभ प्राप्त होता है।

इस दिन काष्ठ पर एक कपड़ा बिछाकर उस पर रस्सी की गांठ लगाकर सर्प का प्रतीक रूप बनाकर, उसे काले रंग से रंग दिया जाता है। कच्चा दूध, घृत और शर्करा तथा धान का लावा इत्यादि अर्पित किया जाता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में इस दिन दीवारों पर गोबर से सर्पाकार आकृति का निर्माण कर सविधि पूजन किया जाता है। प्रत्येक तिथि के स्वामी देवता हैं। पंचमी तिथि के स्वामी देवता सर्प हैं। इसलिए यह कालसर्प योग की शांति का उत्तम दिन है। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार पितृ दोष से मुक्ति के लिए इस दिन भगवान शिव की पूजा का विधान किया गया है। नाग पंचमी पर नाग की पूजा प्रत्यक्ष मूर्ति या चित्रों के रूप में की जाती है। इसी दिन सर्पों के प्रतीक रूप को दूध से स्नान करा कर उनकी पूजा करने का विधान है। दूध पिलाने से, वासुकी कुंड में स्नान करने, निज गृह के द्वार में दोनों और गोबर के सर्प बनाकर उनका दही, दुर्वा, कुशा, गंध, अक्षत, पुष्प, मोदक और मालपुओं आदि से पूजा करने से घर में सर्पों का भय नहीं होता।

नाग पंचमी को चंद्रमा की राशि कन्या होती है और राहु का स्वगृह कन्या राशि है। राहु के लिए प्रशस्त तिथि, नक्षत्र एवं स्वगृही राशि के कारण नाग पंचमी सर्पजन्य दोषों की शांति के लिए उत्तम दिन माना जाता है। पंचमी तिथि को भगवान आशुतोष भी सुस्थानगत होते हैं। इसलिए इस दिन सर्प शांति के अंतर्गत राहु-केतु का जप, दान, हवन उपयुक्त होता है। अन्य दुर्योगों के लिए शिव का अभिषेक, महामृत्युंजय मंत्र का जप, यज्ञ, शिव सहस्रनाम का पाठ, गाय और बकरे के दान का भी विधान है।

**नागों के देवता महादेव की भी करें पूजा**

नाग पंचमी के दिन नाग की पूजा के साथ-साथ नागों के देवता देवाधिदेव महादेव की भी पूजा करना चाहिए।

काल सर्प दोष निवारण के लिए नाग पंचमी के दिन नागनुमा अंगूठी बनवाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा कर उसे धारण करें। इस दिन ब्रह्म मुहूर्त में तांबे का सर्प बनवाकर उसकी पूजा करके शिवलिंग पर चढ़ाएं तथा इससे पूर्व एक रात उसे घर में ही रखें। नाग पंचमी को एक नाग-नागिन सपेरों से बंधन मुक्त कराने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है ।

इस दिन पितृ दोष से परेशान जातक को ***ऊं नमः शिवाय*** मंत्र का जाप करना चाहिए। राहु कवच या राहु स्त्रोत का पाठ करें। राहु की तेल से भगवान शिव का रुद्राभिषेक करवाने से भी तत्काल ओर प्रभावी परिणाम मिलते हैं।

सातमुखी रुद्राक्ष गले में पहने तथा काल सर्प योग के साथ-साथ चंद्र राहु, चंद्र केतु, सूर्य-केतु, एक भी ग्रहण योग हो तो केतु का रत्न लहसुनिया मध्यमा अंगुली में पहनें। इसके अलावा आप घर व कार्यालय में मोर पंख रखें व कालसर्प निदान के लिए शांति विधान करें। चंदन की लकड़ी पर चांदी का जोड़ा बनवाकर पूजा करके धारण करें।

**कालसर्प योग**

गरुड़ पुराण के अनुसार नाग-नाग पंचमी के दिन नाग देवता की पूजा करने से सुख-शांति की प्राप्ति होती है। राहु को सर्प का मुख और केतु को उसकी पूंछ माना जाता है। जब भी समस्त ग्रह इन दोनों ग्रहों के मध्य में आते हैं तो वह कालसर्प योग कहलाता है। कालसर्प योग शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के होते हैं। इसकी शुभता और अशुभता अन्य ग्रहों के योगों पर निर्भर करती है। जब भी कालसर्प योग में पंच महापुरुष योग, रुचक, भद्र, मालव्य व शश योग, गज केसरी, राज सम्मान योग महाधनपति योग बनें तो व्यक्ति उन्नति करता है। जब कालसर्प योग के साथ अशुभ योग बने जैसे-ग्रहण, चाण्डाल, अशांरक, जड़त्व, नंदा, अंभोत्कम, कपर, क्रोध, पिशाच हो तो वह अनिष्टकारी होता है।

ज्योतिषशास्त्र में 576 प्रकार के कालसर्प योग बताए गए हैं जिनमें लग्न से द्वादश स्थान तक मुख्यतः 12 प्रकार के सर्प योगों में अन्नत, कुलिक, वासुकी, शंखपाल, पदम, महापदम, तक्षक, कर्कोटक, शंखनाद, पातक, विशान्त तथा शेषनाग शामिल है।

• शुभ है...

## सांपों की पूजा...

*हिंदू पंचांग के अनुसार सावन माह की शुक्ल पक्ष की पंचमी को नाग पंचमी के रूप में मनाया जाता है। इस दिन नाग देवता या सांपों की पूजा की जाती है। गाय, बैल आदि पशुओं को इस दिन नदी, तालाब में ले जाकर नहलाया जाता है। हमारी संस्कृति ने पशु–पक्षी, वृक्ष–वनस्पति सबके साथ आत्मीय संबंध जोड़ने का प्रयत्न किया है। हमारे यहां गाय की पूजा होती है। कई बहनें कोकिला–व्रत करती हैं। कोयल के दर्शन हो अथवा उसका स्वर कान पर पड़े तब ही भोजन लेना, ऐसा यह व्रत है। हमारे यहां वृषभोत्सव के दिन बैल का पूजन किया जाता है। वट–सावित्री जैसे व्रत में बरगद की पूजा होती है, परन्तु नाग पंचमी जैसे दिन नाग का पूजन जब हम करते हैं, तब तो हमारी संस्कृति की विशिष्टता पराकाष्ठा पर पहुंच जाती है। नाग को देव के रूप में स्वीकार करने में आर्यों के हृदय की विशालता का हमें दर्शन होता है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इस गर्जना के साथ आगे बढ़ते हुए आर्यों को भिन्न–भिन्न उपासना करते हुए अनेक समूहों के संपर्क में आना पड़ा। वेदों के प्रभावी विचार उनके पास पहुंचाने के लिए आर्यों को अत्यधिक परिश्रम करना पड़ा।*

• संदेश...

***सांप हमें कई मूक संदेश भी देता है। सांप के गुण देखने की हमारे पास गुणग्राही और शुभग्राही दृष्टि होनी चाहिए। ंप भी प्रभु का सर्जन है, वह यदि नुकसान किए बिना सरलता से जाता हो, या निरुपद्रवी बनकर जीता हो तो उसे मारने का हमें कोई अधिकार नहीं है। जब हम उसके प्राण लेने का प्रयत्न करते हैं, तब अपने प्राण बचाने के लिए या अपना जीवन टिकाने के लिए यदि वह हमें डस दे तो उसे दुष्ट कैसे कहा जा सकता है? हमारे प्राण लेने वालों के प्राण लेने का प्रयत्न क्या हम नहीं करते?***